ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

राजपूताने में सशस्त्र क्रांति आंदोलन के पुरोधाः ठा. केसरी सिंह बारहठ

The Pioneers of the Armed Revolution Movement in Rajputana: Ch. Kesari Singh Barath

Paper Submission: 15/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11//2021

प्रेम बाफना
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीतिक विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
सुजानगढ़,राजस्थान,भारत

गजादान चारण
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
सुजानगढ़,राजस्थान,भारत

सारांश

देश की स्वाधीनता, स्वधर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अनेक देशभक्तों ने अपनी संपूर्ण अंतर्निहित शक्तियों के बल पर त्याग की अनन्य शौर्यगाथाएं लिखीं। इस कड़ी में राजपूताना का मर्यादित एवं अनुशासित बारहठ परिवार अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इस बारहठ परिवार के महानायक रहे हैं-ठा. केसरीसिंह बारहठ, जिन्होंने भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्ति दिलाने में अपनी प्रचंड इच्छाशक्ति का परिचय दिया। ऐसे महापुरुष इस धरा पर यदा-कदा ही जन्म लेते हैं, जिनका वांछित लक्ष्य के प्रति विश्वास अटूट हो और उस लक्ष्य प्राप्ति के लिए नाम, यश और सुख भोग की सारी आशाओं का बलिदान करके स्वयं सहित पूरे परिवार को राष्ट्रार्थ होम दे। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले ऐसे महान योद्धा के त्याग-बलिदान की गौरव गाथा अमिट रहेगी। उन्होंने शक्ति और निर्भीकता का सुभग संदेश दिया। वे इस बात को भली भांति जानते थे कि शक्ति, साहस एवं आत्मबल के अभाव में व्यक्ति न तो स्वयं के अस्तित्व की रक्षा कर सकता है और न ही अधिकार-प्राप्ति हेतु जीवट संघर्ष। यही कारण रहा कि उन्होंने राष्ट्र के लिए निस्वार्थ भाव से अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। इस आशय की पुष्टि युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद के संयुक्त राज्य अमेरिका से डॉ. नंजुन्दा राव को लिखे पत्र दिनांक 30 नवम्बर, 1890 से होती है, जिसमें स्वामीजी लिखते हैं कि "....मैं जानता हूं और ठीक से जानता हूं कि बड़े-बड़े काम बिना बड़े स्वार्थ-त्याग के नहीं हो सकते। मैं अच्छी तरह जानता हूं, भारत माता अपनी उन्नति के लिए श्रेष्ठ संतानों की बलि चाहती है...। संसार के इतिहास से तुम जानते हो कि महापुरुषों ने बड़े-बड़े स्वार्थ त्याग किए और उनके शुभ फल का भोग जनता ने किया।" स्वातंत्र्य राजसूय में अपनी अनाम आहूति देने वाले ठा. केसरीसिंह बारहठ का बलिदान बेजोड़ है, जिनके तपने-खपने से मिले आजादी रूपी शुभ फल का लाभ स्वतंत्र भारत की जनता को मिला। प्रस्तुत आलेख में ठा. केसरीसिंह बारहठ के ऐसे अमूल्य अवदान को रेखांकित किया गया है।

In order to protect the country's independence, self-religion and culture, many patriots wrote unique stories of sacrifice on the strength of their inherent powers. In this episode, the dignified and disciplined Barath family of Rajputana maintains its unique identity. The superheroes of this twelfth family have been-Th. Kesari Singh Barahth, who showed his mighty will in freeing India from British rule. Such great men are rarely born on this earth,Whose faith in the desired goal is unwavering and for achieving that goal, by sacrificing all the hopes of name, fame and happiness, give a national home to the whole family including himself. The saga of sacrifice and sacrifice of such a great warrior who fought for freedom will remain indelible. He gave a good message of strength and fearlessness. He knew very well that in the absence of strength, courage and self-confidence, neither a person can protect his existence.Nor a vigorous struggle for rights. This was the reason that he selflessly devoted his life for the nation. This effect is confirmed by Swami Vivekananda's letter to Dr. Nanjunda Rao from the United States of America, dated November 30, 1890, in which Swamiji writes that "...I know and know well that ... Great things cannot be done without great self-sacrifice. I know very well that Mother India wants to sacrifice her best children for her progress. You know from the history of the world that great men renounced their great selfishness and the people enjoyed their auspicious results. The sacrifice of Kesari Singh Barath is unmatched, the people of independent India got the benefit of the auspicious fruit of freedom obtained by their austerity. In the present article Such invaluable contribution of Kesari Singh Barath has been highlighted.

मुख्य शब्द
Keywords
बारहठ, राजपूताना, डिंगल, चेतावणी रा चूंगट्या, हिंदुआ-सूरज, दंभी गढ़, वीर भारत सभा, शस्त्रास्त्र, बंदी जीवन, पैतृक जागीर, राजपूत एवं चारण, दहाड़, मंगल रूप, गरबीला, सुजस, प्रचंड इच्छाशक्ति।
Barahath, Rajputana, Dingle, Chetavani Ra Chungtya, Hindu-Suraj, Dabbhi Garh, Veer Bharat Sabha, Arms, Captive Life, Ancestral Jagir, Rajput and Baran, Roar, Mangal Roop, Garbeela, Sujas, Strong willed.

प्रस्तावना

बंग-भंग आंदोलन के पश्चात राजपूताने में नव जागृति का उल्लेखनीय उन्मेष हुआ। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियां जोर पकड़ने लगीं। उस समय राजपूताने का अजमेर-मेरवाड़ा क्षेत्र अंग्रेजी शासन के अधीन था। राजपूताने के शूरवीरों ने अपने शौर्य एवं औदार्य के बल पर देशभर में अपनी विशिष्ट पहचान कायम की, इसलिए राजपूताने की रियासतों पर संपूर्ण भारत के क्रांतिकारियों का ध्यान जाना स्वाभाविक था। इसका एक अतिरिक्त कारण यह भी था कि तब तक राजपूताने में शस्त्र कानून लागू नहीं था अतः क्रांतिकारियों को यहां अन्य प्रांतों की तुलना में कम धनराशि पर शस्त्र उपलब्ध हो जाते थे। राजपूताने में अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन के जन्मदाता अर्जुनलाल सेठी, खरवा के ठा. राव गोपालसिंह, केसरीसिंह बारहठ, विजयसिंह पथिक, ब्यावर के सेठ दामोदरदास राठी व स्वामी कुमारानंद मुख्य थे।[1] तत्कालीन ब्रिटिश सरकार का मानना था कि राजपूताने में उनकी सत्ता को चुनौती देने में सबसे अधिक दमखम वाला कोई व्यक्ति है तो वह है- केसरीसिंह बारहठ।

ठा. केसरीसिंह का जन्म सम्वत् 1929, मार्गशीर्ष कृष्णा 6 तदनुसार 21 नवम्बर 1872 ई. को राजपूताना की मेवाड़ राज्यान्तर्गत शाहपुरा रियासत की अपनी पैतृक जागीर के गांव देवपुरा में हुआ। वे एक माह के थे, तभी उनकी माता का निधन हो गया और वे मां के ममत्व एवं लालन-पालन से वंचित हो गए। पिता श्री कृष्णसिंह की देखरेख में पुत्र की शिक्षा उदयपुर में प्रारम्भ हुई। चारण पाठशाला में पंडित गोपीनाथ शास्त्री (बनारस) के सानिध्य में शिक्षा ग्रहण करने वाले केसरीसिंह पर बाल्यकाल से ही महर्षि दयानन्द का प्रभाव था। एक बार महर्षि दयानन्द ने चारण पाठशाला में छात्रों को उपदेश देते हुए कहा कि ''जाति से तो चारण हो परन्तु कर्मशैली से भी चारण बनो।" ये शब्द केसरीसिंह के हृदय को छू गए और इसी कथन को अपने जीवन में उतार कर कर्म और निर्भीकता को जीवन-शैली का अभिन्न अंग बना लिया। वि.स. 1946 (1889 ई.) के अन्त तक केसरीसिंह चारण पाठशाला में पढ़े। वि.सं. 1947 (1880 ई.) में उनका विवाह कोटा राज्यान्तर्गत कोटड़ी ठिकाने में माणिक्य कुंवर से हुआ। तत्पश्चात वि.सं. 1958 (1891 ई.) से वे मेवाड़ राज्य की सेवा में काम करने लगे। महाराणा फतहसिंह के प्रमुख विश्वस्त परामर्शदाता श्री केसरीसिंह सदैव महाराणा और अन्य रियासतदारों के हृदय में स्वाभिमान और स्वराज्य का भाव जाग्रत करने का सतत् प्रयास करते रहे। अंग्रेजी शासकों के आगे नतमस्तक राजस्थान के नरेशों के आचार विचार के प्रति उनके मन में खिन्नता और खीझ का भाव था। उनकी दृष्टि में यह पूर्वजों के प्रताप को कलंकित कर देने वाला कार्य था। समय के साथ केसरीसिंह बारहठ के बुद्धि, कौशल एवं कार्य क्षमता की चर्चा कोटा राज्य के शासक महाराव उम्मेदसिंह तक पहुँच चुकी थी। महाराव ने केसरीसिंह को कोटा बुला लिया। वे उदयपुर छोड़कर 1900 ई. में कोटा महाराव की सेवा में आ गए। उसके पश्चात् केसरीसिंह ने कोटा को ही अपना स्थायी निवास बना लिया। उनकी कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभा को देखते हुए सन 1902 ई. में उनको ब्रिटिश भारत में विभिन्न जातियों, पेशों आदि के सम्बन्ध में सूचनाएं एकत्रित करने का विशेष कार्य देकर सुपरिन्टेन्डेन्ट एथ्नोग्राफी के पद पर नियुक्त किया गया, जहां वे 1907 ई. तक कार्यरत रहे।[2]

1900 ई. से 1915 ई. के मध्य का कालखण्ड केसरीसिंह के जीवन का निर्णायक समय था। वे पिता की भांति स्वाभिमानी और स्वतंत्र विचारों के धनी थे। उन्हें सन् 1903 में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध न केवल अपना आक्रोश प्रकट करने का अवसर मिला वरन् सफलता भी मिली। 1 जनवरी 1903 को तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन ने दिल्ली में भव्य दरबार का आयोजन किया, जिसमें (एडवर्ड सप्तम् के राज्यारोहण पर) देश भर के राजा महाराजाओं को आमंत्रित किया गया। आमंत्रितों में एक प्रमुख नाम मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह का भी था। हालांकि कुछ कारण से स्वयं महाराणा ने दिल्ली दरबार में शामिल होने से इन्कार कर दिया परन्तु ब्रिटिश सरकार ने पुरजोर प्रयास किया। कुछ शर्तो के साथ महाराणा दिल्ली दरबार में शामिल होने के लिए रवाना हो गए। सच्चे देशभक्त केसरीसिंह बारहठ ने इस अवसर पर अपनी विलक्षण काव्य प्रतिभा का परिचय देते हुए डिंगल भाषा में 'चेतावनी रा चूंगट्या' शीर्षक से 13 सोरठे लिखे और उन्हें महाराजा तक पहुँचाया। केसरीसिंह बारहठ ने 'चेतावणी रा चूंगट्या' में अपनी तर्कशक्ति के बल पर महाराणा को उनके पूर्वजों का विरुद स्मरण करवाते हुए अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया। चूंकि लॉर्ड कर्जन के इस दरबार में देशी राजाओं को 'स्टार ऑफ इंडिया' से नवाजा जा रहा था। इसी को लक्ष्य बनाते हुए बारहठ केसरीसिंह ने कहा कि "हे महाराणा! आपके पूर्वज महाराणा प्रताप को हिंदुस्तान की जनता ने 'हिंदुआ-सूरज' के विरुद से

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

विभूषित किया है और आप 'हिंदुस्तान का तारा' (स्टार ऑफ इंडिया) बनने को उद्वत हैं। हिंदुस्तान की जनता बड़ी आशा भरी निगाह से अपने सूरज की ओर देखेगी लेकिन जब आप उन्हें महज तारे के मानिन्द दिखाई देंगे तो उसे बड़ी निराशा होगी। उन्होंने आगे कहा कि दिल्ली का दंभी दुर्ग जब मेवाड़ के सिसोदिया महाराणा को शीश झुकाते हुए देखेगा तो वह मन ही मन मुस्कुराएगा, जो कि आम हिंदुस्तानी के लिए असह्य होगा-

पेखैला हिंदवाण, निज सूरज दिस नेह सूं।
पण तारा परवाण, निरख निसासां न्हाखसी॥
देखै अंजस दीह, मुळकैलो मन ही मनां।
दंभी गढ़ दिल्लीह, सीस नमंतां सीसवद॥[3]

इन दोहों ने महाराणा के स्वाभिमान को जगा दिया, उन्हें अपने गौरव का भान हो गया और वे दिल्ली पहुंचकर भी ब्रिटिश दरबार में नहीं पहुंचे। महाराणा के इस स्वाभिमानी आचरण से देशभक्तों का सीना गर्व से फूल गया। इससे राजपूताना के नरेशों, जागीरदारों में भी साहस का भाव पैदा हुआ जिसकी तत्कालीन समय में बहुत आवश्यकता थी।

क्रांतिकारी केसरीसिंह बारहठ ने 1904 से 1913 ई. के दौरान इन दस वर्षो में राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए अनेक योजनाएं बनाईं और उनकी क्रियान्विति के लिए प्रयास किए। अनुमानतः 1908 ई. में ठा. केसरीसिंह ने "राजपूताना एण्ड सेन्ट्रल इण्डिया एज्यूकेशनल एसोसिएशन फॉर टेक्नीकल एज्यूकेशन" की रूपरेखा तैयार की।4 इस योजना के पीछे उनका उद्देश्य यह था कि इस एसोसिएशन के खर्चे पर भारतीय विद्यार्थी तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने हेतु इंग्लैण्ड के बजाय जापान भेजे जाएं। वापस स्वदेश आकर ये युवा देश की वैज्ञानिक उन्नति एवं स्वतंत्र राष्ट्र बनाने में सहायक हो सकें। आगे चल कर उन्होंने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सन् 1913 ई. में छात्र शिक्षा परिषद् की योजना बनाई। इसके पूर्व कि केसरीसिंह बारहठ अपनी इस नवीन योजना की क्रियान्विति के अभियान में पूरी तरह कूद पड़ते, वे 31 मार्च 1914 को ब्रिटिश सरकार का तख्ता उलटने के राजनैतिक षडयंत्र से संबंधित मुकद्दमें में शाहपुरा से गिरफ्तार कर लिए गए।

वस्तुतः क्रांतिकारी केसरीसिंह का स्वतंत्रता के प्रति तीव्र अनुराग था, उसे प्राप्त करने की उनके भीतर तड़प थी। उन्होंने अपने ओजस्वी विचारों और कार्यों से राजपूताने को मानसिक जड़ता से मुक्ति दिलाने का अथक प्रयास किया। वे सामाजिक सुधार और जागृति का मार्ग अपनाकर वांछित बदलाव लाने के पक्षधर थे परन्तु तत्कालीन परिस्थितियों ने उन्हें सुधारवाद से क्रांतिकारी मार्ग की तरफ मोड़ दिया। सन 1900 ई. से 1910 ई. की समयावधि में देश के कई भागों में युवाशक्ति सशस्त्र क्रांति की योजनाओं के क्रियान्वयन में लगी हुई थीं। उत्तरी भारत में इस समय गदर पार्टी के लाला हरदयाल, रासबिहारी बोस एवं शचीन्द्रनाथ सान्याल आदि के नेतृत्व में 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की गतिविधियां चल रही थीं। अपने स्वतंत्र और प्रगतिशील विचारों के कारण इस समय केसरीसिंह बारहठ राजपूताने में पर्याप्त पहचान बना चुके थे। इन क्रांतिकारियों के साथ ठा. केसरीसिंह का सम्पर्क सघन हुआ। वे देश की आजादी के लिए प्रयत्नशील क्रांतिकारी योजना में सम्मिलित हो गए।

केसरीसिंह के साथ खरवा के ठाकुर राव गोपालसिंह और जयपुर के अर्जुनलाल सेठी राजपूताना में 'अभिनव भारत' संगठन के माध्यम से क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम देने लगे, जिसमें बाद में केसरीसिंह के अनुज जोरावरसिंह बारहठ, पुत्र प्रतापसिंह बारहठ और जामाता ईश्वरदान आसिया भी जुड़ गए। ठा. केसरी सिंह राजनीतिक दूरदर्शिता संपन्न व्यक्तित्व के धनी थे। राजपूताने में क्रांतिकारी गतिविधियों को व्यापक रूप देने हेतु उन्होंने यहां के नरेशों, जागीरदारों के साथ सभी वर्गो के युवाओं को जोड़ने की दृष्टि से 1910 ई. में 'वीर भारत सभा' (अभिनव भारत की शाखा) नामक संगठन की स्थापना की।5 राजपूताने में एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन के रूप में इसकी स्थापना हुई। इस संगठन के प्रमुख कार्य- क्षित्रियों और अन्य संघर्षशील जातियों में सामाजिक-राजनीतिक चेतना का प्रसार, नवयुवकों को शिक्षा के माध्यम से क्रांतिकारी गतिविधियों से जोड़ना, क्रांति के लिए धन एवं शस्त्रास्त्र एकत्रित करना, रियासतों की फौजों से अंग्रेजी शासन के विरुद्ध बगावत के भाव पैदा करना आदि थे।

ठा. केसरीसिंह के हृदय में देश के लिए असीम प्रेम था। देश के समक्ष उन्होंने स्वयं एवं प्रियजनों के प्राणों को भी तुच्छ माना। यदाकदा ही इस धरा पर ऐसे उदाहरण देखने को मिलते है। रासबिहारी बोस ने तभी कहा था- "ऐसे उदाहरण तो हैं कि पिता ने पुत्र को देश की बलिवेदी पर चढ़ने को भेज दिया परन्तु मेरे सामने केसरीसिंह का यह पहला उदाहरण है जिसने अपने पुत्र के साथ जामाता को भी आगे कर दिया है।"6 कुछ इसी तरह का भाव क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल ने अपनी आत्मकथा 'बंदी जीवन' में व्यक्त किया है। वे लिखते हैं कि "नहीं मालूम आज भारत में कितने ऐसे पिता हैं, जो सरदार केसरीसिंह की तरह सब जान बूझ कर अपने और अपनी संतान को इस प्रकार देश के कार्य में बलि दे सकेंगे।"[7] रामनारायण चौधरी के शब्दों में

बात करें तो "उनका (केसरीसिंह बारहठ) त्याग अनुपम था। उनका सारा परिवार एक तरह से स्वातंत्र्य-पतंगों की तरह कुर्बान हो गया था।"[8]

यह प्रथम विश्वयुद्ध के आसपास का समय था। सन् 1913 ई. के लगभग यूरोप में विश्वयुद्ध की सम्भावनाएं दिखने लगीं और जर्मनी से ब्रिटिश सरकार का युद्ध होना तय सा प्रतीत हो रहा था। इस पूरे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में क्रांतिकारियों ने अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए धन और हथियार एकत्रीकरण एवं विद्रोह करने की तैयारियां तेज कर दी। राजपूताना में इस कार्य को सम्यक रूप से संपादित करने का दायित्व, ठाकुर केसरीसिंह आदि क्रांतिकारियों को दिया गया। क्रांति की तारीख 21 फरवरी 1914 ई. निश्चित की गई।[9] इस कार्य को व्यवस्थित रूप देते हुए विद्रोह हेतु स्थान और संगठन तय किये गए जिसमें मुख्य भूमिका कुं. प्रतापसिंह बारहठ, जोरावरसिंह बारहठ एवं सोमदत्त लहरी की थी। अंग्रेजी सरकार ने केसरीसिंह आदि की इन गतिविधियों को भाँप लिया था और भीतर ही भीतर भयभीत थी। इधर क्रांति योजनाओं की क्रियान्विति के लिए आवश्यक धन की कमी महसूस होने लगी, रासबिहारी बोस के कहने पर आवश्यक धन जुटाने का कार्यभार ठा. केसरी सिंह, अर्जुनलाल सेठी और गोपालसिंह खरवा आदि ने अपने हाथो में ले लिया ।

सिद्धान्त रूप में ऐसा माना जाता है कि राष्ट्रीय हित में यदि कहीं नीति-विरुद्ध आचरण भी करना पड़े तो राष्ट्रार्थ किया गया ऐसा कर्म अनुचित नहीं माना जाता। क्रांति हेतु धन जुटाने की योजना बनाने के दौरान ठा. केसरीसिंह आदि को विश्वस्त सूत्रों से यह जानकारी प्राप्त हुई कि जोधपुर रामद्वारे के महन्त प्यारेराम तथा आरा जिले में निमेज मन्दिर के महन्त भगवानदास के पास विपुल सम्पत्ति है। श्री केसरीसिंह बारहठ ने जोरावरसिंह, हीरालाल, रामकरण, लहरी आदि शिष्यों को जोधपुर के महन्त प्यारेराम से किसी भी भांति धन लाने का आदेश दिया। ये सभी शिष्य अप्रेल, 1912 में जोधपुर पहुंचे परन्तु उक्त कार्य में सफल नहीं हो पाए। बावजूद इसके क्रांतिकारी हताश नहीं हुए। उन्होंने अपना प्रयास जारी रखा। श्री केसरीसिंह ने अपने विश्वासपात्र लोगों को महन्त प्यारेराम को कोटा लाने का आदेश दिया। योजनानुसार महन्त को जून, 1912 में कोटा लाकर तिजौरी की चाबियां प्राप्त करने का प्रयास किया गया। धन प्राप्त करने के इन्हीं सब निवेदनों और प्रयासों के दौरान महन्त की जान चली गई तथा क्रांतिकारियों को उसका धन भी नहीं मिला। इसी तरह 20 मार्च 1913 को नीमेज (आरा) के मंदिर पर छापा मारा गया जिसमें महन्त भगवानदास और उसका नौकर मारा गया।[10] दोनों ही महन्तों से धन लेने में क्रांतिकारी असफल रहे।

लम्बे समय से अंग्रेज सरकार बारहठ केसरीसिंह के क्रिया-कलापों को देखकर नाराज थी। महन्त हत्याकांड की घटना के पश्चात् केसरीसिंह बारहठ एवं उनके शिष्यों को गिरफ्तार किया गया। 31 मार्च, 1914 को बिना अभियोग लगाये केसरीसिंह शाहपुरा में इन्दौर पुलिस के अधिकारियों द्वारा पकड़ लिए गए। जून में उन्हें इन्दौर से कोटा लाया गया। ठा. केसरीसिंह और उनके शिष्यों के विरुद्ध कोटा की स्पेशल अदालत में महन्त प्यारेराम हत्याकाण्ड, राजद्रोह एवं राजनैतिक षडयंत्र रचने को लेकर मुकद्दमा चलाया गया। राजनैतिक दृष्टि से कोटा केस अत्यधिक चर्चित रहा। दिनांक 6 अक्टूबर 1914 को ट्रायल जज मुंशी श्रीराम चौबे द्वारा केसरीसिंह बारहठ को बीस वर्ष के आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।11 उनके दोनों शिष्यों रामकरण एवं लहरी को आजीवन कारावास से दण्डित किया गया तथा हीरालाल को तीन वर्ष कारावास की सजा दी गई। ठा. केसरीसिंह को न केवल आजीवन कारावास की सजा से दण्डित किया गया वरन पूवाग्रह से ग्रसित अंग्रेज सरकार के दबाव के कारण शाहपुरा के नरेश द्वारा उनकी देवपुरा की पैतृक जागीर और सारी सम्पति भी जब्त कर ली गई।

तत्कालीन परिस्थितियों के मद्देनजर कुछ समय पश्चात अंग्रेज सरकार ने ठा. केसरीसिंह को कोटा जेल से बिहार की हजारीबाग जेल में स्थानान्तरित कर दिया। देशप्रेम की राह में सब कुछ न्योछावर करने वाले ठा. केसरीसिंह बारहठ विषमतम परिस्थितियों मे भी तनिक विचलित नहीं हुए। उनका आत्मबल इतना मजबूत था कि वे किसी भी प्रकार का संकल्प करके तदनुसार आचरण कर सकते थे। शाहपुरा में गिरफ्तार किए जाने के बाद उन्होंने जेल का भोजन ग्रहण नहीं किया और यह संकल्प लिया कि उन्हें अपनी पत्नी के हाथ का बना हुआ ही भोजन करना है। ऐसा प्रण उन्होंने इसलिए किया क्योंकि उन्हें यह आशंका थी कि अंग्रेज सरकार उन्हें शारीरिक और आत्मिक (आत्मबल) रूप से कमजोर करने के लिए भोजन में विष आदि कुछ मिला कर दे सकती है। अपने जेल जीवन के दौरान पांच वर्षों तक ठा. केसरीसिंह ने अपने प्रण पर पक्के रहते हुए सिर्फ दूध को ही अपना आहार रखकर अत्यन्त मानिसक दृढ़ता, संयम और उद्देश्य के प्रति अटूट विश्वास का परिचय दिया। ठा. केसरीसिंह के सदाचरण को देखते हुए जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट कर्नल मीक की सिफारिश से वायसराय ने उनकी अपील पर नर्म रुख अपनाते हुए 19 जुलाई 1919 को कारावास की सजा से मुक्त कर दिया गया। एक अन्य उदाहरण, जो उनकी मानसिक दृढ़ता का सबल प्रमाण है, वह कोटा रेल्वे स्टेशन का है, जब वे जेल से मुक्त होकर कोटा आए थे। उन्हें तब तक मालूम नहीं था कि उनका प्रिय पुत्र क्रांतिकारी

कुं. प्रतापसिंह बारहठ बरेली जेल में शहीद हो चुका है। उन्हें रेल्वे स्टेशन पर ही किसी ने पूछा कि "क्या आपको जानकारी है कि प्रताप मर गया।" ठा. केसरीसिंह ने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया "यह मैं आपके मुंह से ही सुन रहा हूं कि वह मर गया, हाँ! देश की स्वतंत्रता के लिए वह शहीद हो गया, यह मेरे लिए संतोष का विषय है।"[12]

जेल के कठोर जीवन ने उन्हें क्षीणकाय बना दिया। समय की मार खाकर सारे संपर्क, साथी एवं क्रांतिकारी संगठन बिखर गए। यद्यपि बहुत कुछ छूट गया तथापि अब भी उनका रोम-रोम देशभक्ति से ओतप्रोत था। उनके हृदय में अपनी मातृभूमि के लिए अगाध प्रेम था। वे अपनी अंतिम सांस भी राष्ट्र को समर्पित करना चाहते थे। यही कारण रहा कि वे सेठ जमनालाल बजाज के आमंत्रण पर वर्धा गए तथा वर्धा में रहते हुए सितम्बर, 1920 में कलकत्ता कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में राजपूताना और मध्य भारत की ओर से देशी राज्य प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। उन्होंने नवम्बर, 1920 में कांग्रेस महासचिव को पत्र लिख कर राजपूताना, मध्य भारत एवं अजमेर को सम्मिलित कर राजस्थान नामक प्रदेश के गठन का सुझाव दिया, जो निस्संदेह उनकी राजनीतिक दूरदृष्टि का परिचायक है। सन 1922 में वे वर्धा से सपरिवार कोटा लौट आए। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता उन पर भारी पड़ने लगी थी, उसके बावजूद राजपूत एवं चारण जातियों में स्वजातीय गौरव की जागृति एवं समाज सुधार का कार्य उन्होंने अनवरत जारी रखा। वैसे अब ना तो उनका शारीरिक स्वास्थ्य अनुकूल था और ना ही नए राजनैतिक वातावरण में व्याप्त आपसी प्रतिस्पर्द्धा, फूट एवं गुटबंदी के साथ मानसिक रूप से सामंजस्य बैठा पाना उनके लिए सहज था।

सन 1923-24 में तो क्रांतिकारियों की कार्यपद्धति एवं क्रियान्वयन आदि को लेकर राजपूताना में प्रमुख क्रांतिकारियों सेठ जमनालाल बजाज, अर्जुनलाल सेठी एवं विजयसिंह पथिक के बीच इतना मतभेद बढ़ गया कि स्वयं महात्मा गाँधी को हस्तक्षेप करना पड़ा। इस दरम्यान गाँधीजी एवं ठा. केसरीसिंह बारहठ के मध्य पत्र व्यवहार भी हुआ। सशस्त्र क्रांति के प्रबल समर्थक एवं प्रदर्शक होने के बावजूद उन्होंने गांधीजी के असहयोग आंदोलन का समर्थन किया। इतना ही नहीं वे स्वयं अपने जीवन का उत्तरार्द्ध गांधीजी के आश्रम में बिताना चाहते थे। इसी मंशा से उन्होंने 07 दिसम्बर, 1940 को राजपूताना के प्रमुख क्रांतिकारी नेता श्री रामनारायण चौधरी को पत्र लिख कर कहा कि "मेरी इन सत्तर वर्ष की बूढ़ी हड्डियों में स्वदेश के लिए शांत आहूति देने का अभी बल है, प्रबल इच्छा भी है।" एक सत्तर वर्षीय राष्ट्रभक्त की ये पंक्तियां किसी भी देशभक्त को रोमांचित कर देने वाली है। ठा. केसरीसिंह के इस पत्र के संबंध में रामनारायण चौधरी एवं गांधीजी के मध्य हुए वार्तालाप तथा उसके प्रत्युत्तर में ठा. केसरीसिंह द्वारा जो कुछ कहा गया, वह सब राष्ट्रप्रेम की ही नहीं मानवीयता की उत्कट अभिव्यक्ति है। रामनारायण चौधरी ने जब केसरीसिंहजी के पत्र की बात गांधीजी से कही तो गांधीजी ने कहा कि "केसरीसिंहजी आएंगे तो उन्हें खुशी होगी। उनके उत्कृष्ट जेल-जीवन का जिक्र मुझसे सर तेजबहादुर सप्रू ने किया था। मगर यहां के दैनिक जीवन का पालन तो सभी के लिए आवश्यक है।" इसके प्रत्युत्तर में ठा. केसरीसिंह ने लिखा कि "मैं अहिंसा को मानव धर्म का सर्वोपरि अंग समझता हूं क्योंकि हिंसा पाशविक वृत्ति है। आततायी पर अबला की रक्षा में कदाचित हाथ उठाने का प्रयोग अपरिहार्य हो तो भी हिंसक का हाथ तोड़कर तुरंत उसकी सुश्रुषा में उतना ही प्रेमपूर्वक लग सकता हूं, जितना कि अपने प्रिय बंधु के लिए। कह नहीं सकता कि यह अहिंसा श्री बापू की अहिंसा की सीमा में आएगी या नहीं।"13 उनके उक्त विचारों से यह स्पष्ट है कि तत्कालीन परिस्थितियों में उन्होंने स्वाधीनता के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु क्रांति का मार्ग चुना परन्तु मूलतः उन्होंने अहिंसा को मानव धर्म का सर्वोपरि अंग माना, जो उनके आचरण एवं व्यवहार में परिलक्षित होता है। यह अलग बात है कि वे बापू के सेवाग्राम आश्रम नहीं जा पाए क्योंकि 14 अगस्त, 1941 को उनका देहावसान हो गया। यद्यपि पार्थिव रूप से वे चले गए किंतु अपने विचारों एवं सुकार्यों के बल पर हमारे बीच सदैव चिरस्थायी रहेंगे।

ठा. केसरीसिंह बारहठ के जीवन पर समग्र दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि विषमताओं एवं विपरीतताओं से उनका अभिन्न रिश्ता था। उनके जीवन में एक के बाद एक ऐसी चुनौतियां आईं, जिन्हें पार पाना अतीव दुष्कर कार्य था किंतु उस महान क्रांतिकारी ने कभी हथियार नहीं डाले। स्वयं की पैतृक जागीर का छीना जाना, कठोर कारावास, परिवार का बेघर होना, सन 1918 में कुं. प्रतापसिंह की शहादत, 1927 में जीवनसंगिनी श्रीमती माणिक्य कुंवर से बिछोह, 1938 में अनुज किशोरसिंह तथा 1939 में अनुज जोरावरसिंह का स्वर्गारोहण, एक के बाद एक परिजनों का साथ छूट जाना, न जाने क्या-क्या सहन नहीं करना पड़ा। इतना कुछ सहने के बाद भी वह बूढ़ा शेर हताश होने की बजाय मातृभूमि की रक्षार्थ दहाड़ता रहा। डिंगल कवि श्री रूपसिंह बारहठ की पंक्तियां द्रष्टव्य हैं, जो उनके जीवन को चरितार्थ करती हैं-

धरा धाम अरु धन्न, गई सह सुख री घड़ियां।
सुत प्रताप ग्यो छोड, झड़ण लागी दुख झड़ियां।
माणिक सी मणि महळ, संग तज सुरग सिधारे।

कुळ रो दीप किसोर, गयो वृद्ध बंधु बिसारे।
सब भांत वेह विपरीत वहै, कीनो सदा रुआड़तो।
तऊ कृष्ण देह वाळो कवी, 'केहर' रह्यो दहाड़तो॥

उन्होंने मन, वचन एवं कर्म से राष्ट्राराधना, समाजसेवा एवं मानवीयता के दृढ़ व्रत का पालन किया। वे किसी जाति, धर्म, स्थान एवं पंथ की संकीर्ण सीमाओं में बंधे हुए नहीं थे। उनके द्वारा अपनी पुत्रियों के नाम लिखे पत्रों में सार्थक जीवन के लिए बड़ा संदेश निहित है। अपनी पुत्री चन्द्रमणि को उन्होंने एक भाव भरा पत्र लिखा, जिसमें देश प्रेम की प्रबलतम अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने लिखा कि "तुम अवश्य यह जानकर संतुष्ट होओगी कि भारत के एक महत्त्वपूर्ण प्रदेश में जागृति होने का प्रारंभ अपने कुटुम्ब की महान आहुति से हुआ है। इस राजसूय यज्ञ में हम लोगों की बलि मंगल रूप हुई है। नाशवान शरीरों की तुच्छता और इस महाभारत अनुष्ठान की महत्ता मिलाकर देखने से यह सब प्रतीत होगा।"[14] इसी भांति उन्होंने अपनी पुत्री सौभाग्यमणि को एक पत्र लिखकर निस्वार्थ सेवा के मूल्य एवं महत्त्व को समझाया। उन्होंने लिखा कि "...सेवा में दो दिन की दौड़ धूप दिखाने से काम नहीं चलेगा। यह तो आजीवन व्रत है अतः परम शांति, धैर्य, सहिष्णुता और आनन्द से फल की इच्छा छोड़कर साधना करते रहना और सेवा में थक कर के भी सदा प्रसन्नचित्त रहना। घर की सेवा तो सब ही करते हैं परन्तु सच्चा सेवाधर्म यह है कि पड़ोस और ग्राम का कोई कुटुम्ब व घर ऐसा न छूटे, जिसमें तेरी सेवा की छाप न लगी हो, फिर वह चाहे किसी जाति या स्वभाव का क्यों न हो।"[15]

अध्ययन का उद्देश्य

'कर्म को ही धर्म' मानकर जिन महान विभूतियों ने साधारण जीवन जीते हुए असाधारण कृत्य संपन्न कर देश-समाज के समक्ष अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किए, वे देश, काल एवं परिस्थितियों की सीमाओं को लांघ कर सदियों तक भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा-पुंज का काम करती हैं। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के परिप्रेक्ष्य में राजपूताने में सशस्त्र क्रांति के जनक ठा. केसरीसिंह बारहठ का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व अतीव महनीय रहा है, जिन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि "भारत में जन्म लेने के साथ ही जो कर्त्तव्य मानव जीवन के साथ अविच्छन्न प्राप्त होते हैं, जो ऋण प्रत्येक देश-संतान पर, चाहे पुरुष हो या स्त्री, सब पर रहता है, उसी कर्त्तव्य को पूर्ण करने, उसी ऋण से मुक्त होने में हमारा कल्याण है।" उन्होंने न केवल यह कहा, वरन इसी को यथार्थ मानते हुए जीवन में चरितार्थ किया। ऐसे आदर्शों को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया जाना चाहिए। निसंदेह ऐसे जीवन चरित्रों के अध्ययन से नौजवानों में नवोत्साह और अजस्र ऊर्जा का संचार होगा एवं वे अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरुक एवं निष्ठावान बने रह सकेंगे। इस आलेख का प्रयोजन ठा. केसरीसिंह बारहठ जैसी हूतात्माओं के जीवन चरित्र को विभिन्न माध्यमों से प्रसारित कर अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना है।

निष्कर्ष

सार रूप में कह सकते हैं कि आजादी की अलख जगाने में ठा. केसरीसिंह बारहठ ने अनुपम आहुतियां दी हैं। वे न केवल क्रांतिकारी योद्धा थे वरन एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ, महान चिंतक, समाज सुधारक, नीतिवेता, शिक्षाविद, साहित्यकार एवं सुलझे हुए विचारक थे। राज एवं समाज को चाहिए कि ऐसी महान हूतात्माओं के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को औपचारिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों का हिस्सा बनाने के साथ-साथ विभिन्न अनौपचारिक रूपों में भी प्रस्तुत किया जाए, जिससे आने वाली पीढ़िया देश की आजादी के मूल्य को सही अर्थों में समझ सकें और अपने कर्त्तव्यों का समुचित पालन करने हेतु कटिबद्ध हो सके। ठा. केसरीसिंह बारहठ के जीवन पर कविवर ठा. अक्षयसिंह रतनू कृत यह दोहा बिल्कुल सटीक है-

रे गरबीले केसरी, सुजस कथित संसार।
तो पर तोर प्रताप पर, अक्षय है बलिहार॥[16]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *राजस्थान का स्वाधीनता आन्दोलन- प्रकाश नारायण नाटाणी, प्रकाशकः ग्रंथ विकास, जयपुर, सं. 1998, पृ. 17*
2. *क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंहः व्यक्तित्व एवं कृतित्व (प्रथम खंड) सं.- डॉ. देवीलाल पालीवाल, डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, श्री फतहसिंह 'मानव' प्रकाशक- राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, प्रथम सं. 1984, पृ. 13*
3. *मौन इतिहासः मुखर यादें-डॉ. कन्हैयालाल राजपुरोहित, प्रकाशन- साईन्टिफिक पब्लिशर्स (इंडिया), प्रथम सं. 2021, पृ. 142*
4. *क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंहः व्यक्तित्व एवं कृतित्व (प्रथम खंड) सं.- डॉ. देवीलाल पालीवाल, डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, श्री फतहसिंह 'मानव' प्रकाशक- राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर प्रथम सं. 1984, पृ. 20*
5. *शिवचरण मेनारिया, राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी, जयपुर, 1995, पृ. 36*

6. *राजस्थान केसरी ठा. केसरीसिंह बारहठ-पुण्य स्मरण, सं.- श्री सवाईसिंह धमोरा, 1976, आलेख श्री हरिप्रसाद अग्रवाल, पृ. 96*
7. *बंदी जीवन (तीनों भाग) उत्तर भारत में क्रांति का उद्योग-शचीन्द्रनाथ सान्याल, सं.-बनारसीदास चतुर्वेदी, प्रकाशक-आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ. 124-125*
8. *वर्तमान राजस्थान-रामनारायण चौधरी, राजस्थान प्रकाशन मंडल, अजमेर, 1948 पृ. 51*
9. *क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंहः व्यक्तित्व एवं कृतित्व (प्रथम खंड) सं- डॉ. देवीलाल पालीवाल, डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, श्री फतहसिंह 'मानव' प्रकाशक- राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर प्रथम सं. 1984, पृ. 27*
10. *वही, पृ. 28*
11. *वही, पृ. 29*
12. *आलोक-संपादक डॉ. गजादान चारण, राजस्थान पाठ्यपुस्तक मंडल, जयपुर, 2016, डॉ. रामचरण महेन्द्र-राष्ट्रमंदिर का सुवासित पुष्पः केसरीसिंह बारहठ, पृ. 23*
13. *स्वातंत्र्य राजसूय यज्ञ में बारहठ परिवार की महान आहूति-ओंकारसिंह लखावत, तीर्थ पैलेस प्रकाशन, जयपुर, प्रथम सं. दिस. 2012, अहिंसा मानव धर्म का सर्वोपरि अंग (पत्र) पृ. 56*
14. *क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंहः व्यक्तित्व एवं कृतित्व (द्वितीय खंड) सं- डॉ. देवीलाल पालीवाल, डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, श्री फतहसिंह 'मानव' प्रकाशक- राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर प्रथम सं. 1986, पृ. 90*
15. *वही, पृ. 71*
16. *स्वातंत्र्य राजसूय यज्ञ में बारहठ परिवार की महान आहूति-ओंकारसिंह लखावत, तीर्थ पैलेस प्रकाशन, जयपुर, प्रथम सं. दिस. 2012, पृ. 13*